बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

वर्ग : स्नातक तृतीय खण्ड								पृष्ठ : 01		दिनांक : 18.09.2020
प्रतिष्ठा	✓	अनुषंगिक	✗	अनुपूरक	✗	रा०भा० हिन्दी	✗	अहिन्दी	✗ हिन्दी	पत्र : VIII
व्याख्यान का विषय : रस-निष्पत्ति के सिद्धांतों की व्याख्या – IV										
प्राध्यापक : डॉ. उमेश कुमार										

<u>अभिनव गुप्त का अभिव्यक्तिवाद</u> :-

अभिनवगुप्त ने रस निष्पत्ति के सम्बंध में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा ~~कि~~ 'भरत के सूत्र में विभावानुभाव-व्यभिचारी के संयोग का अर्थ है कि वे विभाव, अनुभाव, संचारी तो व्यंजक या व्यक्त करनेवाले हैं और रस है व्यंग्य (जो व्यक्त किया जाने योग्य है) तथा निष्पत्ति का अर्थ है रस की अभिव्यक्ति या व्यंजना। इनका मत है कि प्रत्येक श्रोता या दर्शक में स्थायी भाव (रति, शोक, हास, उत्साह आदि) वासना के रूप में निरंतर रहते हैं। यह वासना या तो पूर्व जन्म के संस्कार से या इस जन्म में काव्य आदि का अध्ययन करने या गुणियों और कवियों का सत्संग करके उत्पन्न होती है और निरन्तर निश्चित संस्कार-रूप में रहती है। विभाव, अनुभाव और संचारि भाव के द्वारा इसी स्थायी भाव की अभिव्यंजना होती है। ये स्थायी भाव सामान्य या सबमें साधारण रूप में होते ही हैं।' अभिनव गुप्त कहते हैं कि 'जब कोई भी वस्तु हमारे सम्मुख आती है, उस समय उस वस्तु को हम साधारण रूप से तथा सम्बंध रहित होकर स्वीकृत करते हैं, अर्थात यदि हम किसी सुन्दर वस्तु को देखते हैं तो हम आनन्दित तो होते ही हैं किन्तु उस वस्तु को ग्रहण करने के लिये न आगे बढ़ते हैं, न उसे शत्रु की समझ कर उससे दूर भागते हैं और न किसी उदासीन व्यक्ति की समझकर उससे विरक्त ही होते हैं।' अभिनवगुप्त का मत है कि 'यही सामान्यता अर्थात रागहीन आनन्दानुभूति ही साधारणीकरण है अर्थात रस को जगाने वाले जितने भाव हैं वे जब सर्व-सामान्य के समझ लिए जाते हैं तभी रस की अभिव्यक्ति होती है। उस रस की अभिव्यक्ति के ~~समय~~ समय रस का अनुभव करनेवाला दर्शक भी अपने आपको सामान्य ही समझता है और अनुभव करने के समय यह समझता है कि जितने भी सहृदय हैं उन सबके हृदय में उस रस की अनुभूति समान रूप से होती है।

रस-निष्पत्ति के सन्दर्भ में अभिनवगुप्त साधारणीकरण के पक्षपाती हैं। अभिनव गुप्त यह मानते हैं कि 'दर्शक जब यह निर्लिप्त भाव से मानता है कि किसी वस्तु को देखकर मेरे मन में आनन्द की जैसी अनुभूति हुई है वैसी ही प्रत्येक सहृदय के हृदय में होती है तभी उसके हृदय में रस की अनुभूति या अभिव्यक्ति होती है। वह दुष्यन्त-शकुन्तला को देखकर यह समझने लगता है कि यह दुष्यन्त-शकुन्तला मैं ही हूँ और ऐसा समझने से ही इसे आनन्द या रस मिलता है।